

भारतीय अर्थव्यवस्था में तृतीयक क्षेत्र के योगदान

Anmol Wadhwa, Research Scholar, Department of Commerce, Tania University, Sri Ganganagar (Raj.)
Dr. Veena Taneja, Assistant Professor, Department of Commerce, Tania University, Sri Ganganagar (Raj.)

सार

तृतीयक क्षेत्र विकसित और विकासशील दोनों देशों की अर्थव्यवस्थाओं में केंद्रीय भूमिका निभाता है। वे सभी विकसित अर्थव्यवस्थाओं के सकल घरेलू उत्पाद के आधे से अधिक के लिए जिम्मेदार हैं और अधिकांश विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में एकल सबसे बड़े क्षेत्र का गठन करते हैं। सेवाओं की वृद्धि के पीछे मुख्य कारणों में तेजी से शहरीकरण, सार्वजनिक क्षेत्र का विस्तार और मध्यवर्ती और अंतिम उपभोक्ता सेवाओं की बढ़ती मांग शामिल है। संपूर्ण अर्थव्यवस्था की उत्पादकता और प्रतिस्पर्धात्मकता के लिए कुशल सेवाओं तक पहुंच महत्वपूर्ण हो गई है। अर्थव्यवस्था में प्राथमिक और माध्यमिक गतिविधियों की सफल वृद्धि काफी हद तक बैंकिंग, बीमा, व्यापार, वाणिज्य, मनोरंजन, मशीनरी और उपकरणों के रखरखाव और तृतीयक गतिविधियों के रूप में वर्गीकृत कई अन्य सेवाओं द्वारा दी जाने वाली सेवाओं पर निर्भर करती है। आजादी के बाद से भारतीय अर्थव्यवस्था में संरचनात्मक परिवर्तन आया है।

प्रस्तावना

विकसित देशों (ऑस्ट्रेलिया, फ्रांस, जर्मनी, जापान, अमेरिका, ब्रिटेन आदि) ने अपनी शेष संभावनाओं को सेवा क्षेत्र में इकट्ठा करना शुरू कर दिया जब विऔद्योगीकरण प्रगति पर था। यह आपूर्ति पक्ष स्पष्टीकरण बड़े सेवा क्षेत्र की स्थापना के पीछे के सभी कारणों को स्वीकार नहीं कर सकता है। प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद और प्रति व्यक्ति खपत में वृद्धि के साथ सेवा मांग बढ़ती है। ऐसे कई विकासशील देश हैं जो (जैसे बांग्लादेश, चीन, भारत आदि) सेवा क्षेत्र के विकास के माध्यम से विकास के प्रारंभिक युग में अपनी अर्थव्यवस्था को बढ़ावा दे रहे हैं। छोटे देशों के कई उदाहरण हैं (बारबाडोस, जिबूती, डोमिनिका, जमैका, वानुअतु आदि) जिनकी अर्थव्यवस्थाएं सेवा क्षेत्र के विकास और सेवा निर्यात के आधार पर बन रही हैं। सामान्यतः यह क्षेत्र अर्थव्यवस्था में तीसरे (कृषि, उद्योग फिर सेवा) क्षेत्र के रूप में स्थापित होता है। इसी कारण से इस क्षेत्र को 'उद्योग का तृतीयक क्षेत्र' भी कहा जाता है।

अर्थव्यवस्था को तीन क्षेत्रों में विभाजित किया गया है: प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्र। प्राथमिक क्षेत्र में खेती, वानिकी, पशुपालन और मत्स्य पालन शामिल हैं। विनिर्माण क्षेत्र खनन, निर्माण और विनिर्माण से बना है। अन्य सभी आर्थिक गतिविधियाँ जो कृषि या विनिर्माण क्षेत्रों द्वारा कवर नहीं की जाती हैं, उन्हें मोटे तौर पर सेवाओं के रूप में परिभाषित किया गया है और इसलिए वे सेवा क्षेत्र से संबंधित हैं। इनमें कृषि क्षेत्र के लिए प्रदान की जाने वाली सेवाएँ, पानी, बिजली और गैस की आपूर्ति से जुड़ी गतिविधियाँ, परिवहन और संचार, थोक और खुदरा व्यापार, वित्त और बीमा, व्यवसाय और व्यक्तिगत सेवाएँ, और सामुदायिक और सामाजिक सेवाएँ शामिल हैं। सेवाओं को मोटे तौर पर दो प्रकारों के बीच प्रतिष्ठित किया जा सकता है, अर्थात्, पुरानी और नई। पुरानी या पारंपरिक सेवाओं में छोटा व्यापार, घरेलू सेवाएँ, खानपान और होटल सेवाएँ शामिल हैं। नई सेवाएँ आम तौर पर संचार, व्यवसाय और कानूनी प्रथाओं,

संस्कृति, अनुसंधान और शिक्षा से जुड़ी हैं। तृतीयक क्षेत्र, जिसे सेवा क्षेत्र भी कहा जाता है, भारतीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

साहित्य की समीक्षा

गुरविंदर सिंह (2020) औद्योगिक क्षेत्र में वे सभी गतिविधियाँ शामिल हैं जो कच्चे माल को तैयार उत्पादों में बदलने के लिए की जाती हैं। औद्योगिक क्षेत्र को तीन मुख्य श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है, अर्थात् प्राथमिक क्षेत्र, द्वितीयक क्षेत्र और तृतीयक या सेवा क्षेत्र। सेवा क्षेत्र जनता को विभिन्न सेवाएँ प्रदान करता है। बैंकिंग, शिक्षा, वित्त, संचार स्वास्थ्य, बीमा, परिवहन, रियल एस्टेट और होटल उद्योग आदि इस क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं। भारत का सेवा क्षेत्र इंजीनियरों, शिक्षकों, अभिनेताओं, बैंकरों, डॉक्टरों और अन्य विशेषज्ञों को नौकरी के अवसर प्रदान कर रहा है। भारत उभर कर सामने आया है वैश्विक स्तर पर सेवाओं के व्यापार में सबसे तेजी से बढ़ने वाला देश है। ऑनलाइन व्यापार के आधुनिक युग में यह क्षेत्र बहुत तेजी से बढ़ रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी के विकास ने इस क्षेत्र को और अधिक अनिवार्य बना दिया है। आजकल बिजनेस करने वाले लोग अपने बिजनेस के प्रमोशन के लिए सोशल प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल कर रहे हैं। अतः हम कह सकते हैं कि यह औद्योगिक क्षेत्र भारत की अर्थव्यवस्था के लिए वरदान है।

कुट्सचर और मार्क (1983) के अनुसार, सेवा क्षेत्र माल उत्पादक क्षेत्र को छोड़कर हर उद्योग को सीमित करता है। इस परिभाषा के अंतर्गत सेवाओं में परिवहन, संचार, सार्वजनिक उपयोगिताएँ, थोक और खुदरा व्यापार, वित्त, रियल एस्टेट, बीमा, अन्य व्यक्तिगत और व्यावसायिक सेवाएँ और सरकारी सेवाएँ शामिल हैं। सेवा क्षेत्र की एक और परिभाषा सभी स्तरों पर सरकारी गतिविधियों को छोड़कर और केवल निजी व्यक्तिगत और व्यावसायिक सेवाओं को ध्यान में रखकर संकीर्ण दिखती है जो थोक और खुदरा व्यापार, वित्त, बीमा और रियल एस्टेट जैसे कुछ अन्य क्षेत्रों को मिटा देती है। एल्फ्रिंग (1989) सेवाओं को चार श्रेणियों में विभाजित करता है: निर्माता सेवाएँ, वितरण सेवाएँ, व्यक्तिगत सेवाएँ और सामाजिक सेवाएँ। एक और समान महत्वपूर्ण और अच्छी तरह से स्थापित वर्गीकरण सिंगलमैन (1978) द्वारा लिया गया है और कई अर्थशास्त्रियों द्वारा इसका अनुसरण किया गया है। वह इस तृतीयक क्षेत्र को चार उप क्षेत्रों में वर्गीकृत करता है, जिनमें से प्रत्येक को आईएसआईसी (अंतर्राष्ट्रीय मानक औद्योगिक वर्गीकरण) श्रेणी के रूप में निर्दिष्ट किया गया है। यह सेवा क्षेत्र को वर्गीकृत करने के लिए सबसे अधिक उपयोग की जाने वाली विधियों में से एक है। ISIC के अंतर्गत सेवा क्षेत्र को चार श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है। वितरण सेवाएँ मुख्य रूप से निम्नलिखित गतिविधियों से बनी हैं: मोटर वाहनों और मोटरसाइकिलों की बिक्री, रखरखाव और मरम्मत, ऑटोमोटिव ईंधन की खुदरा बिक्री, थोक व्यापार और कमीशन व्यापार, खुदरा व्यापार, व्यक्तिगत और घरेलू सामानों की मरम्मत, अंतर्देशीय, जल और हवाई परिवहन, ट्रेवल एजेंसियों, संचार की गतिविधियों को छोड़कर सहायक और सहायक परिवहन गतिविधियाँ। व्यावसायिक सेवाओं में वित्तीय मध्यस्थता, बीमा और पेंशन फंडिंग (अनिवार्य सामाजिक सुरक्षा को छोड़कर), वित्तीय

मध्यस्थता के लिए सहायक गतिविधियाँ, रियल एस्टेट गतिविधियाँ, मशीनरी और उपकरण किराए पर लेना, कंप्यूटर और संबंधित गतिविधियाँ, अनुसंधान और विकास (आर एंड डी), कानूनी, तकनीकी, विज्ञापन शामिल हैं। और अन्य व्यावसायिक गतिविधियाँ। सामाजिक सेवाओं में सार्वजनिक प्रशासन, रक्षा, अनिवार्य सामाजिक सुरक्षा, शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक कार्य के क्षेत्र में गतिविधियाँ शामिल हैं। व्यक्तिगत सेवाओं को होटल और खानपान और नियोजित व्यक्तियों वाले निजी घरों के खंडों में विभाजित किया गया है। लेकिन शुगन (1993) का तर्क है - व्यक्तिगत सेवाएँ सेवा क्षेत्र का प्रतिनिधि नहीं हैं।

हॉज (2002) और मट्टू (2002) भी निर्यात या आयात के रूप में सेवा व्यापार के पक्ष में वकालत करते हैं। एफडीआई (प्रत्यक्ष विदेशी निवेश) से लाभ को व्यापार से लाभ माना जाता है। कई मामलों में, सेवाओं का आयात व्यावसायिक उपस्थिति यानी प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का रूप ले लेता है। यह आयात, एफडीआई के माध्यम से, भौतिक पूंजी, मानव पूंजी और प्रौद्योगिकी कारकों के प्रवाह का कारण बनता है - जो विकास और प्रगति के लिए महत्वपूर्ण हैं। "उदारीकृत, उत्पादन-उन्मुख सेवा क्षेत्र, जो आधुनिक और निर्यात-उन्मुख विनिर्माण क्षेत्र के साथ मजबूत क्रॉस-लिंक द्वारा चिह्नित है, रोजगार वृद्धि का मुख्य स्रोत बना हुआ है।" (अरिंग, 2003)। सेवाओं के निर्यात को घरेलू अर्थव्यवस्था के लिए एक आशावादी सौदे के रूप में देखा जाता है। कुछ पर्यटन आधारित गरीब देश पर्यटन सेवाओं का निर्यात करते हैं और समृद्ध अर्थव्यवस्थाओं से पूंजीगत सामान का आयात करते हैं। इस क्षेत्र में विशेषज्ञता छोटे देशों की विकास दर को बढ़ा सकती है (अल्बेलो और मार्टिन 1997)। निर्यात का सन्निहित सेवा घटक विकास के स्तर से दृढ़ता से जुड़ा हुआ है (फ्रांकोइस और रीनर्ट 1995)। सेवा व्यापार के उदारीकरण से सेवा क्षेत्र (सेवा निर्यात सहित) के तेजी से विस्तार के अवसर पैदा होते हैं, जिससे विकास और गरीबी में कमी आएगी (ली, वांग और झाई, 2003)।

ओईसीडी देशों में नियामक सुधार के हालिया अनुभवों से पता चलता है कि सेवा उद्योगों और उपयोगिताओं में उदारीकरण के परिणामस्वरूप क्षेत्रीय उत्पादकता, लागत में कमी और उत्पादन में वृद्धि में महत्वपूर्ण लाभ हुआ है। जर्मनी, फ्रांस और स्पेन में बिजली और दूरसंचार उद्योगों में कुल कारक उत्पादकता (टीएफपी) में उनके हालिया नियामक सुधार के कारण 40 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। जापान में वितरण क्षेत्र में टीएफपी वृद्धि की गुंजाइश अपेक्षाकृत अधिक है। सामान्य तौर पर, संयुक्त राज्य अमेरिका को छोड़कर, अध्ययन किए गए ओईसीडी देशों के लिए टीएफपी में वृद्धि 1.5 प्रतिशत से 3.5 प्रतिशत तक है। संयुक्त राज्य अमेरिका में सुधार प्रेरित उत्पादकता वृद्धि की संभावना कम होने का अनुमान है, क्योंकि इस देश में पहले ही महत्वपूर्ण सुधार हो चुके हैं और क्षेत्रीय श्रम और पूंजी उत्पादकता आम तौर पर अन्य देशों की तुलना में अधिक है (ओईसीडी, 1997)।

लॉली दास (2014) सरकारी एजेंसियां उद्योगों को चार औद्योगिक क्षेत्रों में समूहित करती हैं - कृषि (वानिकी, मछली पकड़ने, मुर्गी पालन, आदि सहित), खनन, विनिर्माण और सेवाएं। इसे तीन क्षेत्रों में भी वर्गीकृत किया जा सकता है अर्थात् प्राथमिक क्षेत्र (कृषि, वानिकी, मछली

पकड़ने और खनन), द्वितीयक क्षेत्र (विनिर्माण) और तृतीयक क्षेत्र (सेवाएँ)। कुछ समय पहले तक सेवा क्षेत्र को अन्य क्षेत्रों जितना महत्वपूर्ण नहीं माना जाता था। हालाँकि, सेवा क्षेत्र का यह दृष्टिकोण काफी बदल गया, विशेष रूप से 1980 के दशक में, जब यह महसूस किया गया कि सेवाओं में आधुनिक अर्थव्यवस्थाओं का एक बड़ा और महत्वपूर्ण घटक शामिल है - औद्योगिक और उत्तर-औद्योगिक दोनों। सेवा क्षेत्र "अमूर्त" वस्तुओं का उत्पादन करता है। कुछ प्रसिद्ध हैं और पहले से ही विद्यमान हैं। सरकार, स्वास्थ्य, शिक्षा और कुछ बिल्कुल हालिया हैं। संचार, सूचना प्रौद्योगिकी, आदि। सेवाओं के उत्पादन में कृषि या औद्योगिक वस्तुओं की तुलना में अपेक्षाकृत कम प्राकृतिक पूंजी और अधिक मानव पूंजी की आवश्यकता होती है। परिणामस्वरूप, अधिक शिक्षित श्रमिकों की मांग बढ़ी है, जिससे देशों को अपने लोगों को समग्र लाभ प्रदान करने वाली शिक्षा में अधिक निवेश करने के लिए प्रेरित किया गया है।

सेवा क्षेत्र: संकल्पना और अर्थ

अर्थव्यवस्था में मूलतः तीन क्षेत्र होते हैं। पहला, प्राथमिक क्षेत्र जिसमें कृषि, मछली पकड़ने और खनन जैसे निष्कर्षण शामिल हैं। दूसरा क्षेत्र द्वितीयक क्षेत्र है जिसमें विनिर्माण शामिल है। तीसरा क्षेत्र तृतीयक क्षेत्र है जिसे सेवा क्षेत्र भी कहा जाता है।

सेवा क्षेत्र की मूल विशेषता अंतिम उत्पाद के बजाय सेवाओं का उत्पादन है। सेवाएँ अमूर्त वस्तुएँ हैं जिनमें ध्यान, सलाह, अनुभव और चर्चा शामिल हैं। इनका उपयोग उत्पादकता, प्रदर्शन, क्षमता और स्थिरता को बढ़ाने के लिए किया जाता है। सूचना के उत्पादन को भी एक सेवा माना जाता है। हालाँकि, कुछ अर्थशास्त्री सूचना सेवा से संबंधित सेवाओं को चौथे क्षेत्र में वर्गीकृत करना पसंद करते हैं, जिसे अब चतुर्थांश क्षेत्र के रूप में जाना जाता है, यानी वह क्षेत्र जो तीसरे के बाद और पांचवें स्थान से ठीक पहले आता है।

तृतीयक क्षेत्र में तीव्र वृद्धि के कारण

तृतीयक, यानी, गैर-वस्तु क्षेत्र, कमोडिटी क्षेत्र की तुलना में बहुत तेज दर से बढ़ रहा है। संक्षेप में इसका मतलब यह है कि संचलन की प्रक्रिया में उत्पन्न आय सीधे उत्पादक प्रक्रिया की तुलना में बहुत तेज गति से बढ़ी, और इसके परिणामस्वरूप गैर-वस्तु क्षेत्र की हिस्सेदारी में वृद्धि हुई। इस प्रवृत्ति को कई कारकों के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है, जिनमें से अधिक महत्वपूर्ण इस प्रकार हैं:

सूचना प्रौद्योगिकी और ज्ञान अर्थव्यवस्था का आगमन एक बहुत ही महत्वपूर्ण कारक रहा है। इससे सेवा क्षेत्र के उच्च उत्पादकता खंड के विकास के साथ-साथ बड़ी संख्या में लोगों की जरूरतों को पूरा करने वाली कम उत्पादकता वाली गतिविधियों से जुड़ी विभिन्न सेवा गतिविधियों में वृद्धि हुई है।

द्वितीय. सेवा क्षेत्र के एक बड़े हिस्से में बैंकिंग, बीमा, वित्त, परिवहन और संचार जैसे बुनियादी ढांचे और शैक्षिक और चिकित्सा सुविधाओं जैसी सामाजिक और सामुदायिक सेवाएं शामिल हैं। विकास की तत्काल आवश्यकता अर्थव्यवस्था के अन्य क्षेत्रों की जरूरतों को पूरा करने के लिए बुनियादी ढांचे का उचित विस्तार और लोगों की भलाई के लिए सामाजिक और सामुदायिक

सेवाओं का विस्तार है।

iii. सार्वजनिक सेवाएँ अधिक तेज़ी से बढ़ती हैं जहाँ राष्ट्रीय सरकारों की समग्र अर्थव्यवस्था में योजना और उत्पादन में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। वास्तव में, आधुनिक सरकारों के 'दृश्य हाथ', जैसा कि सरकारी नीतियों और पिछले कुछ दशकों के दौरान राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय अधिकारियों के विस्तार पैटर्न में परिलक्षित होता है, तेज़ी से आर्थिक और सामाजिक बुनियादी ढांचे के निर्माण की ओर निर्देशित हैं।

iv. विदेशी व्यापार, पर्यटन और सांस्कृतिक और शैक्षिक दौरों के विस्तार के कारण बढ़ती गतिशीलता के परिणामस्वरूप प्रदर्शन प्रभाव का संचालन एक अन्य महत्वपूर्ण कारक है।

v. बढ़ते शहरीकरण को अर्थव्यवस्था में सेवा क्षेत्र के विस्तार का एक अन्य कारण माना जा सकता है। वास्तव में, शहरीकरण संचार, सार्वजनिक उपयोगिताओं और वितरण सेवाओं जैसी बुनियादी ढांचा सेवाओं की मांग में वृद्धि के साथ निकटता से जुड़ा हुआ है। बढ़ते शहरीकरण के साथ अर्थव्यवस्था के निजी उपभोग पैटर्न में महत्वपूर्ण बदलाव देखा गया है। कई नई वस्तुएँ और सेवाएँ उपभोग टोकरी में प्रवेश करती हैं।

डेटा और कार्यप्रणाली

विश्व व्यापार संगठन (2012) का कहना है कि सेवा क्षेत्र विश्व उत्पादन का 60 प्रतिशत हिस्सा है, लेकिन विश्व व्यापार का केवल 20% हिस्सा है। हालाँकि, सेवाओं में वैश्विक व्यापार का प्रतिशत बढ़ेगा, क्योंकि दूरसंचार, शिक्षा और वित्त जैसी सेवाएँ अभी भी अंतर्राष्ट्रीयकृत हैं और घरेलू बाजारों से परे पेश की जाती हैं। इस प्रकार वैश्वीकरण पूरे विश्व में राष्ट्रीय आर्थिक संरचनाओं को बदल देता है। आर्थिक विकास की वर्तमान प्रवृत्ति तृतीयक क्षेत्र की सापेक्ष वृद्धि को दर्शाती है, जबकि औद्योगिक और कृषि विकास में गिरावट आ रही है। भारतीय सेवा क्षेत्र 2000 की दूसरी छमाही में दोहरे अंक की वृद्धि के साथ तेज़ी से बढ़ा। जैसे-जैसे यूरो ज़ोन संकट गहराता गया, विकास धीमा हो गया, हालाँकि यह क्षेत्र अभी भी अर्थव्यवस्था के अन्य दो क्षेत्रों की तुलना में बहुत तेज़ी से बढ़ रहा है। हमारा शोध इसी रुचि के प्रति समर्पित है। इस संदर्भ में, वर्तमान अध्याय हमारे विश्लेषण के डेटा पद्धति संबंधी विवरण से संबंधित है।

तृतीयक क्षेत्र और विकास गतिशीलता (मॉडल)

आर्थिक वृद्धि और विकास का एक अभिन्न अंग उत्पादन और रोजगार का संरचनात्मक परिवर्तन है क्योंकि देश बढ़ता और विकसित होता है। यह सर्वविदित है कि औद्योगीकरण के दौरान उत्पादन और रोजगार में कृषि की हिस्सेदारी कम हो जाती है और उत्पादन और सेवाओं की हिस्सेदारी बढ़ रही है। एक निश्चित बिंदु पर, जैसे-जैसे उद्योग में तेज़ी आती है, उत्पादन में उत्पादकता में वृद्धि रोजगार वृद्धि की भरपाई करती है और सेवाओं में रोजगार की हिस्सेदारी लगातार बढ़ रही है क्योंकि उत्पादन में रोजगार की हिस्सेदारी घटने लगती है। वर्तमान में, पूर्व और दक्षिण पूर्व एशिया के कुछ बहुत खुले देशों में उत्पादन में एक मजबूत तुलनात्मक लाभ है, लेकिन उत्पादन का यह हिस्सा चरम पर पहुंच सकता है और गिर सकता है क्योंकि अर्थव्यवस्था अंततः बढ़ते राजस्व के जवाब में निर्यात करती है और इसके बड़े सेवा

मिश्रण के साथ घरेलू मांग का महत्व बढ़ जाता है।

डेटाबेस और समायोजन

हमारे अध्ययन से संबंधित प्रासंगिक डेटा का विश्लेषण चक्रवृद्धि दर (सीजीआर) की मदद से किया गया है। इसके अलावा, विश्लेषण के लिए सरल प्रतिशत विधि का भी उपयोग किया गया है। भारतीय अर्थव्यवस्था पर द्वितीयक डेटा का उपयोग किया गया है। संरचनात्मक परिवर्तन के विश्लेषण के लिए, राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी (सीएसओ) से सेक्टर स्तर के डेटा का उपयोग किया गया है। क्षेत्रीय शेयरों, इनपुट संरचना, उत्पादन संरचना और संरचना के कुछ अन्य प्रमुख तत्वों के संदर्भ में संरचनात्मक परिवर्तन का विश्लेषण किया गया है। उत्पादन संरचना के लिए, स्थिर कीमतों पर सकल घरेलू उत्पाद पर डेटा का उपयोग किया गया है। डेटा तीन मुख्य क्षेत्रों से संबंधित है, अर्थात्, प्राथमिक, माध्यमिक और तृतीयक, और तृतीयक क्षेत्र उपक्षेत्रों के लिए। भारत में तृतीयक क्षेत्र के विभिन्न उप-क्षेत्रों की वृद्धि का विश्लेषण किया गया है।

भारतीय अर्थव्यवस्था में तृतीयक क्षेत्र

सेवा क्षेत्र देश के सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए एक आकर्षण है। आज, यह दुनिया का सबसे बड़ा और सबसे तेजी से बढ़ने वाला क्षेत्र है, जो विश्व स्तर पर उच्च उत्पादन में योगदान देता है और किसी भी अन्य क्षेत्र की तुलना में अधिक लोगों को रोजगार देता है। हाल के वर्षों में सेवा क्षेत्र अधिक महत्वपूर्ण हो गया है, क्योंकि तकनीकी प्रगति ने सीमा पार सेवाएं प्रदान करने के नए तरीकों को सक्षम किया है। इस क्षेत्र में उत्पादकता की वृद्धि हाल ही में सूचना प्रौद्योगिकी और पेशेवर सेवा क्षेत्र में मांग-गहन सेवाओं के तेजी से विकास से प्रेरित हुई है, जो मुख्य रूप से विदेशी बाजार पर केंद्रित है। यह अध्याय भारतीय अर्थव्यवस्था में सेवा क्षेत्र की वृद्धि, योगदान और विकास की जांच करता है।

सेवा क्षेत्र सूचना और संचार प्रौद्योगिकियों के क्षेत्र में सबसे जटिल से लेकर अनौपचारिक क्षेत्र द्वारा प्रदान की जाने वाली सरल सेवाओं तक की गतिविधियों की एक विस्तृत श्रृंखला को कवर करता है। सेवा को एक प्रकार की आर्थिक गतिविधि के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो अमूर्त है और संग्रहीत नहीं है और स्वामित्व की ओर नहीं ले जाती है। उभरते विकासशील देशों में भारत की विशेषता सेवा क्षेत्र की प्रमुख भूमिका है। यह क्षेत्र न केवल देश में बल्कि वैश्विक परिवेश में भी सबसे बड़े और सबसे तेजी से बढ़ते क्षेत्रों में से एक बन गया है। परिणामस्वरूप, वैश्विक उत्पादन और रोजगार में इसका योगदान उल्लेखनीय है।

तृतीयक क्षेत्र का इनपुट-आउटपुट विश्लेषण

अध्ययन का जटिल अभिधारणा यह है कि अत्यधिक और तिरछी तृतीयक अर्थव्यवस्था का सिस्टम की संरचना, लिंक और मैक्रो गतिशीलता के संदर्भ में अपना प्रभाव होता है। इस परिकल्पना के संबंध में, वर्तमान भाग भारत में सेवा क्षेत्र के विशेष संबंध में I/O की संरचना और अंतर-क्षेत्रीय लिंक के विश्लेषण से संबंधित है। इस अध्ययन में आंकड़ों का विश्लेषण किया गया है और अर्थव्यवस्था में टूटे हुए बुनियादी संरचनात्मक संबंधों का पता लगाया गया

है। इनपुट और आउटपुट फ्रेमवर्क एक उपयुक्त तरीका है। सबसे पहले, विश्लेषण समग्र स्तर पर किया गया और फिर प्रत्येक क्षेत्र के छीलने के साथ स्तर पर विकसित किया गया। समग्र स्तर पर, तीन क्षेत्रों के स्तर पर इनपुट और आउटपुट और लिंक की संरचना का विश्लेषण किया गया: प्राथमिक, माध्यमिक और तृतीयक क्षेत्र। गतिशीलता के बारीक विवरण के लिए यही अभ्यास, साठ सेक्टर-स्तरीय पृथक्करणों में किया गया था।

समग्र स्तर पर विश्लेषण

समग्र स्तर पर, अर्थव्यवस्था को तीन क्षेत्रों में विभाजित किया गया था: प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्र। इस वर्ग के लिए, वर्गीकरण इनपुट संरचना, आउटपुट संरचना और रिवर्स और फॉरवर्ड बाइंडिंग दोनों को विश्लेषण के लिए संसाधित किया गया था। अध्याय का उद्देश्य भारतीय अर्थव्यवस्था में तृतीयक क्षेत्र के विशेष संबंध में एक व्यापक संरचना को परिभाषित करना है।

तृतीयक क्षेत्र की विशिष्ट आउटपुट संरचना

तृतीयक क्षेत्र की विशेष आउटपुट संरचना को इनपुट इनपुट के लिए आउटपुट की क्षेत्रीय डिलीवरी का विश्लेषण करके सबसे अच्छी तरह से विस्तृत किया जा सकता है। क्षेत्र के उत्पादन के वितरण में अन्य क्षेत्रों के सापेक्ष तृतीयक क्षेत्र का प्रतिशत हिस्सा उत्पादन को खत्म करने के लिए तृतीयक क्षेत्र पर प्रणाली की निर्भरता का एक मोटा अनुमान देता है। समग्र स्तर पर, भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए उपलब्ध विभिन्न IOTT तालिकाओं के लिए आउटपुट का वितरण किया गया।

अर्थव्यवस्था की तृतीयक प्रक्रिया की प्रकृति और प्रवृत्तियों को समझने के लिए, हमने अर्थव्यवस्था को प्राथमिक माध्यमिक और तृतीयक क्षेत्रों के पारंपरिक वर्गीकरण के बजाय वस्तु और सेवा क्षेत्र में विभाजित किया है। यह 1968-69 से 20013-14 तक विभिन्न अलग-अलग वर्षों के लिए वस्तु उत्पादन और सेवा क्षेत्र के अंतःविषय उपयोग के सापेक्ष प्रतिशत वितरण को इंगित करता है। तालिका के अनुसार, सकल उत्पादन के प्रतिशत के रूप में मध्यवर्ती का कुल उपयोग, जो 1968-69 में 38.80% था, 1978-1979 में 43.90% बढ़कर, 1989-90 में 48.60%, 2006 में 58.00% हो गया। 2007, 2013-14 में 69.46 पर। इससे पता चलता है कि कमोडिटी क्षेत्र और सेवा क्षेत्र की कुल मध्यवर्ती खपत में लगातार सुधार हो रहा है। उपयोग किए गए मध्यवर्ती उत्पादों की आपूर्ति में निरंतर सुधार और क्षेत्र में अंतिम खपत में कमी आर्थिक विकास की एक स्वस्थ विशेषता है, जिसका अर्थ है कि अंतिम खपत के लिए आउटपुट के बजाय, सिस्टम का इनपुट हिस्सा सीधे उत्पन्न होता है और उत्पादन प्रणाली अर्थव्यवस्था में सुधार हो रहा है। इस मध्यवर्ती इनपुट का वस्तु और सेवा क्षेत्र में विभाजन इस तृतीयक प्रणाली की आगे की गतिशीलता को उजागर कर सकता है। 2013-14 में कमोडिटी क्षेत्र ने अपने मध्यवर्ती उपभोग के लिए कमोडिटी उत्पादन का 55.34% उपयोग किया, जबकि 1968-69 में 33.60%, 1978-79 में 38.00%, 1989-90 में 42.50%, 1998-99 में 41.20%, 45.70% का उपयोग किया। 2003-04, और 2006-07 में 46.56%।

तालिका : भारत में विभिन्न वर्षों में आउटपुट के वितरण का क्षेत्रीय प्रतिशत

क्षेत्र	वर्ष	आउटपुट की डिलीवरी (प्रतिशत)				
		कमोडिटी सेक्टर	सेवा क्षेत्र	मध्यवर्ती उपयोग	अंतिम उपयोग	कुल उत्पादन
कमोडिटी सेक्टर	1968-69	33.60	5.20	38.80	61.20	100
	1973-74	34.50	5.30	39.80	60.20	100
	1978-79	38.00	5.90	43.90	56.10	100
	1983-84	40.30	6.50	46.80	53.20	100
	1989-90	42.50	6.20	48.60	51.40	100
	1993-94	40.30	7.60	48.00	52.00	100
	1998-99	41.20	7.90	49.10	50.90	100
	2003-04	45.70	9.30	55.00	45.00	100
	2006-07	46.56	11.44	58.00	42.00	100
	2013-14	55.34	14.11	69.46	30.54	100
सेवा क्षेत्र क्षेत्र	1968-69	21.80	9.40	31.20	68.80	100
	1973-74	21.20	9.40	30.60	69.40	100
	1978-79	23.40	15.50	38.90	61.10	100
	1983-84	24.40	13.10	37.50	62.50	100
	1989-90	27.80	12.80	40.60	59.40	100
	1993-94	26.80	11.70	38.50	61.50	100
	1998-99	23.60	13.20	36.80	63.20	100
	2003-04	24.60	12.80	37.40	62.60	100
	2006-07	17.26	18.60	35.86	64.14	100
	2013-14	15.69	14.88	30.57	69.43	100

स्रोत: विभिन्न मुद्दे इनपुट और आउटपुट लेनदेन तालिकाएँ, सीएसओ

तृतीयक क्षेत्र की विशिष्ट इनपुट संरचना

तृतीयक क्षेत्र के लिए विशिष्ट इनपुट संरचना को अन्य क्षेत्रों के क्षेत्रों के क्षेत्रीय इनपुट विश्लेषण द्वारा सर्वोत्तम रूप से निपटाया जा सकता है। सेक्टर इनपुट के वितरण में अन्य क्षेत्रों के संबंध में तृतीयक क्षेत्र की प्रतिशत हिस्सेदारी इसकी इनपुट आवश्यकताओं के कारण अन्य क्षेत्रों पर तृतीयक क्षेत्र की निर्भरता का एक मोटा अनुमान देती है। समग्र स्तर पर, भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए उपलब्ध विभिन्न IOTT तालिकाओं का इनपुट संरचना विश्लेषण किया गया। यह तालिका विभिन्न वर्षों के I/O लेनदेन के आधार पर कमोडिटी और तृतीयक क्षेत्रों के लिए क्रॉस-सेक्टरल इनपुट उपयोग के प्रतिशत टूटने का एक समान दृश्य देती है।

समग्र स्तर लिंकेज पैटर्न

पिछले चार दशकों में, भारतीय अर्थव्यवस्था के परिवर्तन को इस तथ्य से दिखाया गया है कि, पारंपरिक कृषि-अर्थशास्त्र से सत्तर के दशक तक, अर्थव्यवस्था ने खुद को एक सेवा-उन्मुख अर्थव्यवस्था में बदल दिया है, खासकर 1980 के दशक के मध्य से। 1980 के दशक के मध्य में शुरू किए गए आर्थिक सुधारों और 1990 के दशक की शुरुआत से उनके कार्यान्वयन के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए सकल घरेलू उत्पाद में तृतीयक क्षेत्र की हिस्सेदारी लगातार बढ़ रही है। जीडीपी की संरचना में बदलाव से उत्पादन और मांग के बीच अंतर-उद्योग संबंधों में महत्वपूर्ण बदलाव आए हैं। यह इस सवाल पर चिंतित होना चाहिए कि तृतीयक क्षेत्र वस्तु उत्पादन के दो अन्य क्षेत्रों से कैसे जुड़ा है।

तृतीयक क्षेत्र को आउटपुट डिलीवरी

तृतीयक क्षेत्र को क्षेत्रीय आउटपुट की अलग-अलग डिलीवरी का दायरा अपने आउटपुट से बचने के लिए तृतीयक क्षेत्र पर क्षेत्र की आगे की निर्भरता का एक विचार देता है। तृतीयक क्षेत्र में वृद्धि स्वस्थ है यदि यह अन्य क्षेत्रों को खरीदने के लिए एक मजबूत उत्पादन अवसर पैदा करती है। सेक्टर आउटपुट को मध्यवर्ती खपत और अंतिम खपत के रूप में निपटाया जाता है। कुल मध्यवर्ती खपत से, तृतीयक क्षेत्र के लिए इनपुट तृतीयक क्षेत्र पर अर्थव्यवस्था की उत्पादन प्रणालियों की निर्भरता में योगदान देता है।

कुल मध्यवर्ती आपूर्ति के प्रतिशत के रूप में तृतीयक क्षेत्र द्वारा मध्यवर्ती खपत के लिए विभाजित स्तर पर क्षेत्र की डिलीवरी का विश्लेषण निम्नलिखित अनुभाग में किया गया था। कुल तृतीयक क्षेत्र इनपुट से मध्यवर्ती खपत आवश्यकताओं के लिए, प्राथमिक क्षेत्र द्वारा आपूर्ति किए गए इनपुट का प्रतिशत तालिका में दिखाया गया है। 2013-14 में प्राथमिक क्षेत्र अपनी मध्यम अवधि की डिलीवरी का एक चौथाई से अधिक तृतीयक क्षेत्र "अन्य खनिज" (59.49%), "अन्य फसलें" (55.92%), "वानिकी और लॉगिंग" 30.97%), "कोयला और लिग्नाइट" (28.54%) और "पशुपालन" (21.17%)। 'कोयला और लिग्नाइट' और 'पशुधन' को छोड़कर इन सभी क्षेत्रों में विचाराधीन अवधि के दौरान डिलीवरी में महत्वपूर्ण सुधार देखा गया।

तृतीयक क्षेत्र के साथ पिछड़ा संबंध

क्षेत्र के उत्पादन के सकल मूल्य के प्रतिशत के रूप में तृतीयक क्षेत्रों से क्षेत्र में प्रवेश से क्षेत्र को इनपुट की ओर वापसी मिलती है। क्षेत्र का प्रतिशत हिस्सा जितना अधिक होगा, तृतीयक क्षेत्र पर निर्भरता उतनी ही अधिक होगी। समग्र रूप से तृतीयक क्षेत्र पर साठ क्षेत्रों में से प्रत्येक की इस प्रतिशत निर्भरता की गणना विचार किए गए सभी चार संदर्भ वर्षों के लिए की गई थी, और 1 से 6 का क्रम अत्यधिक निर्भर क्षेत्रों के लिए प्रथम उच्चतम रैंक द्वारा और 60 से सबसे कम निर्भर क्षेत्रों के लिए बनाया गया था। .

संपूर्ण रूप से तृतीयक क्षेत्र पर प्रत्येक प्राथमिक क्षेत्र की इनपुट निर्भरता तालिका में दिखाई गई है। 2013-14 में, 11 प्राथमिक क्षेत्रों में से 50 से ऊपर की श्रेणी में सात क्षेत्र हैं, जो तृतीयक क्षेत्र पर बहुत कम निर्भरता का संकेत देता है। 2013-14 में, कृषि, फसलें, मत्स्य

पालन, अन्य फसलें, कृषि फसलें और वानिकी तृतीयक क्षेत्र के उत्पादन की प्रति इकाई अपने इनपुट के दस प्रतिशत से भी कम पर पहुंच गए हैं। कृषि में, खाद्य फसलों के लिए यह इनपुट आवश्यकता 17.01% और पशुपालन के लिए 15.07% है। "तेल और प्राकृतिक गैस" और "कोयला और लिग्नाइट" क्षेत्रों के लिए यह प्रतिशत आवश्यकता क्रमशः 14.55% है। 9.78% समय के संदर्भ में, तालिका में उजागर किया गया एक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि उच्च प्रतिक्रिया वाले क्षेत्रों ने समय के साथ अपनी स्थिति में सुधार किया है। उत्पादन की प्रति इकाई इनपुट आवश्यकता के लिए तृतीयक क्षेत्र पर उच्च और बेहतर निर्भरता प्राथमिक क्षेत्र श्रेणी में "खाद्य फसलों", "पशुपालन", "कोयला और लिग्नाइट" और "कच्चे तेल और प्राकृतिक गैस" द्वारा निर्धारित की जाती है। समय के साथ, प्राथमिक क्षेत्र फीडबैक की रैंकिंग में ऊपर चला जाता है, यानी, तृतीयक क्षेत्र पर इनपुट निर्भरता।

आउटपुट की प्रति इकाई क्षेत्रीय सकल मूल्य वर्धित

आउटपुट की प्रति इकाई जोड़ा गया सकल मूल्य उस क्षेत्र की सापेक्ष दक्षता के लगभग होता है जिसमें जोड़ा गया मूल्य होता है। भारत में किसी अन्य वर्ष में उत्पादन की प्रति इकाई क्षेत्र का सकल मूल्य वर्धित तालिका में दिखाया गया है। 2013-14 में, क्षेत्र में उत्पादन की प्रति इकाई सकल मूल्य वर्धित 0.2115 था। उसी वर्ष, उत्पादन की प्रति इकाई सकल मूल्य वर्धित द्वितीयक क्षेत्र में लगभग तीन गुना, तृतीयक क्षेत्र में और प्राथमिक क्षेत्र में 3.5 गुना था। समग्र आर्थिक स्तर पर, उत्पादन की प्रति इकाई सकल मूल्य वर्धित, जो सुधार प्रक्रिया की शुरुआत में 0.5327 था, 1998-99 में सुधरकर 0.5685 हो गया, लेकिन फिर 2003-04 और 2013-14 में गिरकर 0.4974 और 0.4667 हो गया। कुल मिलाकर, पिछले दशक में उत्पादन की प्रति इकाई सकल मूल्य वर्धन में तेजी से गिरावट आई है। उत्पादन की प्रति इकाई सकल मूल्य वर्धित में यह गिरावट तीन क्षेत्रों के बीच समान रूप से विभाजित है: प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्र। ध्यान देने योग्य एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि प्राथमिक क्षेत्र में अब ऐतिहासिक रूप से उत्पादन की प्रति इकाई उच्चतम सकल वर्धित मूल्य है; यह 2013-07 में 0.7235 प्रति यूनिट उत्पादन है।

तृतीयक क्षेत्र और विकास गतिशीलता: मॉडल

जैसे-जैसे कोई देश बढ़ता और विकसित होता है, आर्थिक वृद्धि और विकास का एक अभिन्न अंग उत्पादन और रोजगार का संरचनात्मक परिवर्तन है। एक सर्वविदित तथ्य यह है कि औद्योगीकरण के दौरान, उत्पादन और रोजगार में कृषि का हिस्सा गिर जाता है, और विनिर्माण और सेवाओं का हिस्सा तदनुसार बढ़ जाता है। एक निश्चित बिंदु के बाद, जैसे-जैसे विनिर्माण क्षेत्र परिपक्व होता है, विनिर्माण में उत्पादकता वृद्धि रोजगार वृद्धि को कम कर देती है और सेवाओं की रोजगार हिस्सेदारी में वृद्धि जारी रहती है जबकि विनिर्माण की रोजगार हिस्सेदारी में गिरावट शुरू हो जाती है। वर्तमान में, पूर्व और दक्षिण पूर्व एशिया के कुछ बहुत खुले देशों में विनिर्माण में एक मजबूत तुलनात्मक लाभ है, लेकिन विनिर्माण उत्पादन का हिस्सा चरम पर पहुंच सकता है और घट सकता है क्योंकि बढ़ती आय और घरेलू मांग के जवाब में

अर्थव्यवस्था अंततः अपने बड़े सेवा घटक के साथ पुनर्संतुलित हो जाती है।

निष्कर्ष और नीति निहितार्थ

सेवा क्षेत्र देश के सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए एक जीवन रेखा है। आज, यह दुनिया का सबसे बड़ा और सबसे तेजी से बढ़ने वाला क्षेत्र है जो दुनिया भर में वैश्विक उत्पादन में योगदान देता है और किसी भी अन्य क्षेत्र की तुलना में अधिक लोगों को रोजगार देता है। जैसे-जैसे राज्य विकास के निम्न से उच्च स्तर की ओर बढ़ता है, एक ओर सरल से अधिक आधुनिक और अधिक जटिल विनिर्माण तकनीकों की ओर और दूसरी ओर, प्राथमिक से माध्यमिक और/या तृतीयक की ओर बदलाव होता है। तृतीयक क्षेत्र पिछले दो दशकों में दुनिया का सबसे बड़ा और सबसे तेजी से बढ़ने वाला क्षेत्र बन गया है। अत्याधुनिक प्रौद्योगिकी के साथ संयुक्त तृतीयक क्षेत्र की अत्यधिक वृद्धि के भविष्य के आर्थिक विकास मॉडल पर अपने निहितार्थ हैं। अप्रचलित तृतीयक क्षेत्र का आर्थिक विकास, रोजगार और प्रणाली की स्थिरता पर प्रभाव पड़ता है। वर्तमान में भारत में तृतीयक क्षेत्र की हिस्सेदारी सकल घरेलू उत्पाद में लगभग 60 प्रतिशत है। वैश्विक अधिकांश देशों ने संक्रमण की निगरानी की, यानी प्राथमिक, माध्यमिक और तृतीयक, लेकिन भारत में प्राथमिक से तृतीयक क्षेत्र में संक्रमण द्वितीयक क्षेत्र से होकर गुजरा। सेवा क्षेत्र, जिसे तृतीयक या अवशिष्ट क्षेत्र के रूप में भी जाना जाता है, भारत सहित किसी भी अर्थव्यवस्था में आर्थिक विकास के लिए अपरिहार्य है।

नीति क्रियान्वयन

तृतीयक क्षेत्र प्रणाली के प्राकृतिक विकास और लिंकेज पैटर्न का परिणाम नहीं रहा है। यह उत्पादन और वितरण दोनों मोर्चों पर एक खराब जुड़ा हुआ क्षेत्र है। इस वृद्धि की कमज़ोर प्रकृति लंबे समय में इसकी व्यवहार्यता से संबंधित कई मुद्दों को उठाती है। इस संदर्भ में, नीतिगत निहितार्थ निम्नलिखित हैं।

1. अनुपातहीन वृद्धि ने प्राथमिक से माध्यमिक और फिर तृतीयक क्षेत्र के प्राकृतिक संक्रमण को दरकिनार कर दिया है। परिणामस्वरूप, यह एक उप-प्रणाली के रूप में विकसित हो गया है जो कि प्रणाली का स्वाभाविक परिणाम नहीं है। ऐसे स्टैंडअलोन उप-प्रणाली की दीर्घकालिक व्यवहार्यता और स्थिरता का एक बड़े डेटाबेस के साथ विश्लेषण करने की आवश्यकता है।
2. तृतीयकीकरण के उच्च स्तर को बनाए रखने के लिए बुनियादी ढांचे में भारी निवेश की आवश्यकता है।
3. सेवा क्षेत्र की वृद्धि की हिस्सेदारी और वर्तमान गति को केवल नवाचार के माध्यम से ही बनाए रखा जा सकता है। अनुसंधान और विकास में निवेश की सार्वजनिक और निजी पहल समय की मांग है।
4. तृतीयक क्षेत्र की वृद्धि और उच्च प्रति व्यक्ति आय वृद्धि में इसका अनुवाद बौद्धिक पूंजी का एक कार्य है। यदि तृतीयक क्षेत्र के नेतृत्व वाले विकास के लाभों को कायम रखना है, तो खराब मानव पूंजी वाले राज्यों को इसे विकसित करने और श्रम की दक्षता

में सुधार करने की आवश्यकता है।

5. प्राथमिक क्षेत्र पर दबाव कम करने के लिए अधिक शैक्षिक अवसर और प्रशिक्षण कौशल प्रदान किए जाने चाहिए ताकि अधिक कार्यबल को सेवा क्षेत्र में लगाया जा सके।
6. तेजी से बढ़ते तृतीयक क्षेत्र और कमोडिटी क्षेत्र के बीच एक कमजोर पिछड़ा संबंध है। इसका कारण भारत में कमजोर मानव संसाधन आधार और कमोडिटी क्षेत्र की असंगत वृद्धि है। इसलिए, कमोडिटी क्षेत्र को सेवा क्षेत्र के अनुरूप बढ़ने की योजना बनाने की आवश्यकता है।

संदर्भ की सूची

1. प्रिया लक्ष्मी (2012) भारत में सेवा क्षेत्र का आर्थिक विकास और प्रभाव Int.J.Buss.Mgt.Eco.Res., खंड 3(5),2012,627-632 www.ijbmer.com | आईएसएसएन: 2229-6247
2. अज़ोनी, कार्लोस; और एंड्रेड, अलेक्जेंड्रे (2005), "ब्राजील में तृतीयक क्षेत्र और क्षेत्रीय असमानता", क्षेत्र ईटी विकास, वॉल्यूम। 21, पृ. 155-172.
3. भट्टाचार्य, बी.बी. और अरूप मित्रा (1990), "भारतीय अर्थव्यवस्था में तृतीयक क्षेत्र की अतिरिक्त वृद्धि: मुद्दे और निहितार्थ", इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, वॉल्यूम। 25, संख्या 44 (नवंबर 3, 1990), पीपी 2445-2450।
4. डेज़ैन, निकिता (2012), "तृतीयक क्षेत्र का विकास: ब्रिक देशों और चुनिंदा विकसित अर्थव्यवस्थाओं के बीच एक तुलनात्मक विश्लेषण", हेलसिंकी मेट्रोपोलिया यूनिवर्सिटी ऑफ एप्लाइड साइंसेज, पीपी.1-51।
5. घोष बी.एन. (1991), "विकास और तृतीयक क्षेत्र", आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक, खंड 26, संख्या 82। पी. 452.
6. जोशी, सीमा (2004), "भारत में तृतीयक क्षेत्र संचालित विकास: रोजगार और गरीबी पर प्रभाव", इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, वॉल्यूम। 39, संख्या 37.
7. मजूमदुर, दीपक और सरकार, संदीप (2007), "तृतीयक क्षेत्र में रोजगार और कमाई की वृद्धि 1983-2000", इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, वॉल्यूम। एक्सएलआईआई, नंबर 11।
8. नागराज, आर. (1991), "तृतीयक क्षेत्र की अतिरिक्त वृद्धि?", इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, वॉल्यूम। 26, क्रमांक 5.
9. सिंह, रविंदर (2009), "भारत में तृतीयक क्षेत्र का प्रबंधन", कृषि नेतृत्व शिखर सम्मेलन पर प्रस्तुत पेपर।
10. सुंदरम, सत्या (2002), "भारत में तृतीयक क्षेत्र की अतिरिक्त वृद्धि", पी. जगदीश गांधी और पी. गणेशन (सं.), भारतीय अर्थव्यवस्था में सेवा क्षेत्र, डीप एंड डीप प्रकाशन, नई दिल्ली।

11. सुल्तान, मुयेद (2008), "तृतीयक क्षेत्र विश्व अर्थव्यवस्था पर हावी होने जा रहा है; क्या हमें चिंता करनी चाहिए?" एमपीआरए पेपर नंबर 14681, पोस्ट 3. नवंबर 2009 03:11 यूटीसी ऑनलाइन <http://mpra.ub.uni-muenchen.de/14681/> पर
12. भट्टाचार्य, बी.बी. और अरूप मित्रा, 1990, भारतीय अर्थव्यवस्था में तृतीयक क्षेत्र की अतिरिक्त वृद्धि, मुद्दे और निहितार्थ, ईपीडब्ल्यू, 3 नवंबर, 2445-2450।
13. बी बी भट्टाचार्य, अरूप मित्रा, भारतीय अर्थव्यवस्था में तृतीयक क्षेत्र की अत्यधिक वृद्धि: मुद्दे और निहितार्थ इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, खंड 25, अंक 44, पृष्ठ। 2445 - 2450 पोस्ट किया गया: 1990-11-03
14. रीनर्ट, के., (1995), उत्पादन और व्यापार की संरचना में सेवाओं की भूमिका: एक क्रॉस-कंट्री विश्लेषण से शैलीबद्ध तथ्य। सीईपीआर चर्चा पत्र संख्या 228। लंदन, आर्थिक नीति अनुसंधान केंद्र। <http://www.cepr.org/pubs/dps/DP1228.asp>
15. रिडल, डोरोथी आई., (1986), सेवा-आधारित विकास: विश्व विकास में सेवा क्षेत्र की भूमिका। प्रेगर पब्लिशर्स, वेस्टपोर्ट, कनेक्टिकट।